Historical Terminologies Asked in UPSC Exam

प्रिय अभ्यर्थियों,

भारतीय इतिहास में मुख्य शब्दावलियाँ सिविल सर्विसेज प्रारंभिक परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। संघीय सिविल सेवा परीक्षा एवं राज्य सिविल सेवा परीक्षा इन दोनों में इस प्रकार के प्रश्न बहुत ही आम हैं। परन्तु यह तैयारी का एक ऐसा क्षेत्र है जिसे प्रायःअभ्यर्थी नजरअंदाज करके निकल जाते हैं, किन्तु इन प्रश्नों के महत्व को देखते हुए The Study संस्थान ने इन पारिभाषिक शब्दावलियों को आधार बनाकर प्रश्नों की एक श्रृंखला आरम्भ की है। हमें विश्वास है कि यह श्रृंखला आपकी आगामी प्रारम्भिक परीक्षाओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

परामिता/पारमिता

'परामिता' शब्द 'परम्' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है सबसे उन्नत अवस्था। बौद्ध धर्म की महायान शाखा में परामिता मार्ग पर बल दिया गया है। बौद्ध धर्म में परिपूर्णताओं या कुछ विशेष गुणों की चरम उन्नयन की स्थिति को परामिता कहा गया है। इन गुणों का विकास पवित्रता की प्राप्ति, कर्म को पवित्र करने आदि के लिए किया जाता है, ताकि उपासक बिना किसी बाधा के जीवन जीते हुए ज्ञान की प्राप्ति कर सके।

Questions asked in UPSC (Pre.) Examination

Q.: भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में 'परामिता' शब्द का सही विवरण निम्नलिखित में से कौन-सा है? (IAS-2020)

(a) सूत्र पद्धति में लिखे गए प्राचीनतम धर्मशास्त्र पाठ।

(b) वेदों के प्राधिकार को अस्वीकार करने वाले दार्शनिक सम्प्रदाय।

(c) परिपूर्णताएँ, जिनकी प्राप्ति से बोधिसत्व पथ प्रशस्त हुआ।

(d) आरम्भिक मध्यकालीन दक्षिण भारत की शक्तिशाली व्यापारी श्रेणियाँ

उत्तर - (c)

संभावित प्रश्न

Q.: भारत की धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में 'पारमिता' पद का संबंध किससे है?

(a) जैन मत (b) बौद्ध मत (c) आजीवक मत (d) शैव मत

उत्तर - (b)

कुल्यावाप तथा द्रोणवाप

कुल्यावाप एवं द्रोणवाप भूमि माप की पद्धतियाँ थीं। गुप्तकाल में भूमि की माप के लिए आढ़वाप (3/8 **से** 1/2 **एकड़ भूमि**), **द्रोणवाप** (1/2 **से** 2 **एकड़ भूमि**) **तथा कुल्यावाप** (12 **से** 16 **एकड़ भूमि**) **पद्धतियों का प्रयोग होता था, जो क्रमशः अधक, द्रोण तथा कुल्य मात्रा में अनाज को उपजाने के लिए आवश्यक थीं।**

Note:- इनके अतिरिक्त, भूमि माप के लिए अंगुल, धनु, दंड, नाल, पाटक, प्रवरतवाप तथा पदावर्त नामक अन्य पद्धतियाँ भी प्रचलन में थीं, जिनमें अंगुल भूमि की सबसे छोटी माप होती थी।

Questions asked in UPSC (Pre.) Examination

Q.: **भारत के इतिहास के संदर्भ में, 'कुल्यावाप' तथा 'द्रोणवाप' शब्द क्या निर्दिष्ट करते हैं?** **(IAS- 2020)**

(a) **भू-माप** (b) **विभिन्न मौद्रिक मूल्यों के सिक्के**

(c) **नगर की भूमि का वर्गीकरण** (d) **धार्मिक अनुष्ठान**

उत्तर - (a)

संभावित प्रश्न

Q.: **गुप्तकाल में भूमि माप के लिए किन-किन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता था?**

1- **आढ़वाप** 2- **नाल** 3- **पदावर्त** 4- **शाद्वल**

5- **गुनाइगढ़**

कूटः

(a) 1, 2, 3 (b) 1, 2, 3, 4 (c) 1, 2, 3, 5 (d) 1, 2, 3, 4,5

उत्तर - (a)

KARMANYEVADHIKARASTE MAA PHALESHU KADACHAN THE STUDY An Institute for IAS

स्थाविरवादी/लोकोत्तरवादी

स्थाविरवादी और लोकोत्तरवादी दोनों बौद्ध धर्म से संबंधित सम्प्रदाय हैं। स्थाविरवाद या थेरवाद संप्रदाय से आशय है- श्रेष्ठ जनों की शिक्षाएँ। इस संप्रदाय के लोग बुद्ध को एक महापुरुष के रूप में मानते हैं। इसका संबंध हीनयान शाखा से है। इसमें 'अरहत' पर बल दिया गया है जिसका अर्थ है स्वयं के प्रयत्न द्वारा मोक्ष प्राप्त करना।

लोकोत्तरवादी का संबंध बौद्ध धर्म की महासंघिक शाखा से है, जो आगे चलकर महायान संप्रदाय में परिवर्तित हुई। इसमें बुद्ध को एक देवता के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके अनुयायी मानते हैं कि मोक्ष की प्राप्ति बोधिसत्व के माध्यम से संभव है। बोधिसत्व निर्वाण प्राप्त कर चुके महापुरूष थे, जो लोगों को मोक्ष प्राप्त करने में सहायता करते थे।

Questions asked in UPSC (Pre.) Examination

Q. भारत के धार्मिक इतिहास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - **(IAS- 2020)**

1- स्थाविरवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध है।

2- लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।

3- महासंघ के द्वारा बुद्ध के देवत्वारोपण ने महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 3 (d) केवल 1 और 3

उत्तर - (b)

संभावित प्रश्न

Q. प्राचीन भारत के धार्मिक इतिहास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1- महायान बौद्ध धर्म में अरहत की प्राप्ति पर बल दिया गया।

2- उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी थेरवाद की दो उपशाखाएँ थीं।

3- बौद्ध भिक्षु द्वारा संघ की स्थायी सदस्यता की अवस्था 'उपसम्पदा' कहलाती थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3

(c) केवल 3 (d) केवल 2

उत्तर - (c)

हुंडी

भारतीय इतिहास में हुंडी का तात्पर्य एक विनिमय पत्र से होता था जिसका प्रयोग व्यापारी धन के लेन-देन, बाजार से ऋण लेने तथा दूरस्थ क्षेत्रों से व्यापार करने में करते थे। आधुनिक युग में प्रयोग किए जाने वाले चैक, बिल ऑफ़ एक्सचेंज आदि हुण्डी के ही विकसित रूप हैं।

Questions asked in UPSC Exam

Q.: निम्नलिखित में से कौन-सा उपवाक्य, उत्तर हर्षकालीन स्रोतों में प्रायः उल्लिखित 'हुंडी' के स्वरूप की परिभाषा बताता है? (IAS-2020)

(a) राजा द्वारा अपने अधीनस्थों को दिया गया परामर्श
(b) प्रतिदिन का लेखा-जोखा अंकित करने वाली बही।
(c) विनिमय पत्र
(d) सामन्त द्वारा अधीनस्थों को दिया गया आदेश।

उत्तर - (c)

संभावित प्रश्न

Q.: मध्यकालीन भारतीय इतिहास में निम्नलिखित में से व्यापार एवं विनिमय के लिए किसका प्रयोग प्रचलन में था?

(a) श्रेणी (b) हुण्डी (c) निष्क (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (b)

परिव्राजक/श्रमण/उपासक

परिव्राजक - जब कोई बौद्ध भिक्षु अपने घर का परित्याग कर किसी बौद्ध आचार्य के अधीन भ्रमणशील जीवन व्यतीत करने का निर्णय लेता था, तो उसे परिव्राजक कहते थे तथा इस संस्कार को पबज्जा (प्रव्रज्या) कहा जाता था। इस अवसर पर वह अपने केशों का त्याग कर गेरुए वस्त्र धारण कर लेता था।

KARMANYEVADHIKARASTE MA PHALESHU KADACHAN THE STUDY An Institute for IAS

श्रमण - **बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले व्यक्ति को उपसम्पदा (स्थायी सदस्यता) की स्थिति से पहले 'श्रमण' का दर्जा दिया जाता था, फिर 10 वर्षों बाद उसकी योग्यता स्वीकृत होने पर उसे 'भिक्षु' का दर्जा मिलता था।**

उपासक - **संघ के बाहर गृहस्थ जीवन में रहकर बौद्ध धर्म मानने वाले साधारण अनुयायी उपासक कहलाते थे।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए-** **(IAS-2020)**

1- **परिव्राजक - परित्यागी व भ्रमणकारी**
2- **श्रमण - उच्च पद प्राप्त पुजारी**
3- **उपासक - बौद्ध धर्म का साधारण अनुगामी**

उपर्युक्त में से कौन-से सही सुमेलित हैं?

(a) **केवल** 1 **और** 2 (b) **केवल** 1 **और** 3
(c) **केवल** 2 **और** 3 (d) 1, 2 **और** 3

उत्तर - (b)

मिरासिदार/औरंग/बेनियान

मिरासिदार - **थलकारी या मिरासदार राज्य को भू-राजस्व का भुगतान करते थे और गांव के बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करते थे। ये भूमि के वंशानुगत मालिक थे।**

औरंग - **'औरंग' गोदाम (warehouse) के लिए प्रयुक्त एक फ़ारसी शब्द है। यह एक ऐसा स्थान होता है, जहाँ सामान बेचे जाने से पहले एकत्र किया जाता है। 'औरंग' शब्द 'तैयार माल की कार्यशाला' को भी संदर्भित करता है।**

बेनियान - **बेनियान ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रबंधकों के व्यक्तिगत भारतीय एजेंट के रूप में कार्य करता था। वह व्यक्तिगत व्यावसायिक गतिविधियों के प्रबंधन के साथ-साथ दुभाषिए के रूप में भी कार्य करता था।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए-** **(IAS-2020)**

1- **औरंग - राजकोष का प्रभारी**

KARMANYEVADHIKARASTE MAA PHALESHU KADACHAN An Institute for IAS THE STUDY

2- बेनियान - ईस्ट इंडिया कंपनी का भारतीय एजेंट

3- मिरासिदार - राज्य का नामित राजस्व दाता

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर - (b)

विष्टि

गुप्तकाल में विष्टि का तात्पर्य बेगार या बलात् श्रम से था जो राज्य के लिए आय का स्रोतों था। यह सामान्य जनता से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर था। इससे किसानों के शोषण में वृद्धि हुई। विष्टि पद्धति का पहला पुरातात्विक साक्ष्य रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से प्राप्त होता है।

Questions asked in UPSC Exam

Q.: गुप्तकाल के दौरान भारत में बलात् श्रम (विष्टि) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है? **(IAS-2019)**

(a) इसे राज्य के लिए आय का एक स्रोतों, जनता द्वारा दिया जाने वाला एक प्रकार का कर, माना जाता था।

(b) यह गुप्त साम्राज्य के मध्य प्रदेश तथा काठियावाड़ क्षेत्रों में पूर्णतः विद्यमान था।

(c) बलात् श्रमिक साप्ताहिक मजदूरी का हकदार होता था।

(d) मजदूर के ज्येष्ठ पुत्र को बलात् श्रमिक के रूप में भेज दिया जाता था।

उत्तर - (a)

संभावित प्रश्न

Q.: निम्नलिखित में से कौन-कौन गुप्तकाल के राजस्व स्रोतों में शामिल थे?

1- बलि 2- उद्रंग 3- विष्टि 4- हिरण्य

5- वात-भूत

कूटः

(a) 1, 2, 3 (b) 3, 4, 5 (c) 3, 4 (d) 1, 2, 3, 4, 5

KARMANYEVADHIKARASTE MA PHALESHU KADAACHAN THE STUDY An Institute for IAS

उत्तर - (d)

आमिल

सल्तनत काल में 'आमिल' या 'अमलगुजार' शब्द का प्रयोग ग्राम में भूमि कर की वसूली करने वाले अधिकारी के लिए किया जाता था। मुगल काल में जिले के प्रमुख राजस्व अधिकारी के रूप में आमिल खालिसा भूमि से लगान एकत्रित करता था तथा आय-व्यय की वार्षिक रिपोर्ट केन्द्र को भेजता था। इसके अतिरिक्त कोतवाल की अनुपस्थिति में यह न्यायिक कार्य भी करता था। 'वितिकची' , आमिल के सहयोगी के रूप में कार्य करता था।

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-** **(IAS-2019)**

1- **दिल्ली सल्तनत के लिए राजस्व प्रशासन में राजस्व वसूली के प्रभारी को 'आमिल' कहा जाता था।**

2- **दिल्ली सुल्तानों की इक्ता प्रणाली एक प्राचीन देशी संस्था थी।**

3- **'मीर-बख्शी' का पद दिल्ली के खिलजी सुल्तानों के शासनकाल में अस्तित्व में आया।**

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) **केवल** 1 (b) **केवल** 1 **और** 2

(c) **केवल** 3 (d) 1, 2 **और** 3

उत्तर - (a)

जागीरदार/जमींदार

जागीरदार - मुगल काल में मनसबदारों को 'नकद' एवं 'जागीर' दोनों रूपों में वेतन दिया जाता था। जब मनसबदारों को वेतन के रूप में जागीर दी जाती थी, तो वे जागीरदार कहलाते थे। ये वंशानुगत नहीं होते थे, बल्कि अपने प्रशासनिक कार्यों के बदले में भूमि आवंटन के अधिकार प्राप्त करते थे।

जमींदार - **जमींदार अपनी भूमि के स्वामी होते थे। ये अपने प्रभाव क्षेत्र से भू-राजस्व का संग्रह कर राज्य को देते थे तथा बदले में वित्तीय मुआवजा प्राप्त करते थे। इनके राजस्व अधिकार वंशानुगत होते थे। इनका मुख्य कार्य राजस्व की वसूली था, किंतु इसके अतिरिक्त वे आवश्यकता पड़ने पर कुछ विशेष सेवाएँ व संसाधन राज्य को उपलब्ध कराते थे।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **मुगल भारत में संदर्भ में, जागीरदार और जमींदार के बीच क्या अंतर है/हैं?** **(IAS-2019)**

1- **जागीरदारों के पास न्यायिक और पुलिस दायित्वों के एवज में भूमि आवंटनों का अधिकार होता था, जबकि जमींदारों के पास राजस्व अधिकार होते थे तथा उन पर राजस्व उगाही को छोड़कर अन्य कोई दायित्व पूरा करने की बाध्यता नहीं होती थी।**

2- **जागीरदारों को किए गए भूमि आवंटन वंशानुगत होते थे और जमींदारों के राजस्व अधिकार वंशानुगत नहीं होते थे।**

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए-

(a) **केवल** 1 (b) **केवल** 2 (c) 1 **और** 2 **दोनों** (d) **न तो** 1, **न ही** 2

उत्तर - (d)

स्थानकवासी

स्थानकवासी संप्रदाय का संबंध जैन धर्म से है। यह जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा का एक उपसंप्रदाय है। इसकी स्थापना 1653 **ई. में 'लवजी' नामक व्यापारी ने की थी। इस मत के अनुसार ईश्वर निराकार है। इसलिए ये मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करते। जैन धर्म का श्वेताम्बर संप्रदाय उदारवृत्ति वाला था तथा धार्मिक नियमों में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन का पक्षधर था।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **भारत की धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में 'स्थानकवासी' सम्प्रदाय का संबंध किससे है?** **(IAS-2018)**

(a) **बौद्ध मत** (b) **जैन मत**

(c) **वैष्णव मत** (d) **शैव मत**

उत्तर - (b)

संभावित प्रश्न

Q.: **स्थानकवासी संप्रदाय का संबंध है-**

(a) **स्थविरवादी शाखा से** (b) **महायान शाखा से**

(c) **श्वेताम्बर शाखा से** (d) **दिगम्बर शाखा से**

उत्तर - (c)

सौत्रान्तिक/सम्मितीय/सर्वास्तिवादी

सौत्रान्तिक बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा का प्रमुख संप्रदाय है। इसके अतिरिक्त वैभाषिक भी इसी शाखा का अन्य प्रमुख संप्रदाय है। सर्वास्तिवादी, सम्मितीय और स्थविरवादी हीनयान के अन्य उपसंप्रदाय हैं। बौद्ध धर्म के अंतर्गत सर्वास्तिवादी में प्रयुक्त सर्व का तात्पर्य तीनों कालों अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्य से है। इनकी मान्यता थी कि फ़िनोमिना के अवयव पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं, अपितु अव्यक्त रूप में सदैव अस्तित्ववान रहते हैं।

इसके अतिरिक्त, महायान बौद्ध संप्रदाय के दो मुख्य उपसंप्रदाय हैं - शून्यवाद या माध्यमिका एवं विज्ञानवाद या योगाचार।

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- (IAS-2018)**

1- **सौत्रान्तिक और सम्मितीय जैन मत के संप्रदाय थे।**

2- **सर्वास्तिवादियों की मान्यता थी कि दृग्विषय (फ़िनोमिना) अवयव पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं, अपितु अव्यक्त रूप में विद्यमान रहते हैं।**

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) **केवल** 1 (b) **केवल** 2 (c) 1 **और** 2 **दोनों** (d) **न तो** 1, **न ही** 2

उत्तर - (b)

एरिपत्ति/तनयूर/घटिका

एरिपत्तिः- एरिपत्ति भूमि मुख्यतः जलाशय भूमि थी, जिससे प्राप्त राजस्व को पृथक रूप से ग्राम जलाशय के प्रबंधन हेतु निर्धारित कर दिया जाता था।

तनियूर:- **तनियूर, चोल साम्राज्य** (850-1200 **ई.**) **के प्रशासन से संबंधित शब्द है। इसके तहत सभी ग्राम एक स्वशासित इकाई के समान थे। प्रत्येक ग्राम मिलकर एक नाडु** (**स्थानीय क्षेत्र**) **का निर्माण करते थे। नाडु के अंतर्गत अनेक ग्राम संघ 'कुर्रम' कहलाते थे। तनियूर या तंकुर्रम बड़े नगरों में गठित कुर्रम थे। कहीं-कहीं बड़े गाँव के लिए भी तनियूर का ही प्रयोग किया गया है।**

घटिका:- **पल्लव राज्य के अंतर्गत 'घटिका' शब्द का प्रयोग कर्नाटक के मंदिरों के निकट स्थित संस्कृत महाविद्यालयों** (**शैक्षणिक संस्थान**) **के लिए किया जाता था।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए-** **(IAS-2016)**

शब्द	**विवरण**
1- **एरिपत्ति -**	**भूमि, जिससे मिलने वाला राजस्व अलग से ग्राम जलाशय के रख-रखाव के लिए निर्धारित कर दिया जाता था।**
2- **तनियूर -**	**एक अकेले ब्राह्मण अथवा एक ब्राह्मण समूह को दान में दिए गए ग्राम**
3- **घटिका -**	**प्रायः मंदिरों के साथ संबद्ध महाविद्यालय**

उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?

(a) 1 **और** 2 (b) **केवल** 3 (c) 2 **और** 3 (d) 1 **और** 3

उत्तर - (d)

अरघट्टा

मध्यकालीन भारत में 'अरघट्टा (**वाटर-व्हील**)' **कृषि भूमि की सिंचाई का एक प्रकार था। तुर्कों के आगमन के पश्चात् नई प्रौद्योगिकियों के विकास क्रम में कागज, चरखा, लोहे की रकाब आदि अन्य उपकरणों का प्रचलन शुरू हुआ। साथ ही सिंचाई व्यवस्था में भी सुधार हुआ। नोरिया, रहट** (**अरघट्टा**), **चरस, साकिया एवं दौलाब सिंचाई के प्रचलित साधन थे। नोरिया केवल खुले तल** (**नदी, तालाब**) **पर काम कर सकता था, जबकि रहट गहरे कुओं से भी पानी निकाल सकता था। गियर युक्त रहट** (**पर्शियन व्हील**) **का प्रथम वर्णन बाबर ने किया है।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **मध्यकालीन भारत के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में शब्द 'अरघट्टा (Arghatta) किसे निरूपित करता है?** **(IAS-2016)**

(a) **बंधुआ मजदूर**

(b) **सैन्य अधिकारियों को दिए गए भूमि अनुदान**

(c) **भूमि की सिंचाई के लिए प्रयुक्त जल चक्र** (वाटर-व्हील)

(d) **कृषि भूमि में बदली गई बंजर भूमि।**

उत्तर - (c)

मागध/अग्रहारिक

मागध - **प्राचीन भारत में मागध एक दरबारी था। वस्तुतः प्राचीन भारत से संबंधित इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों या महाकाव्य संबंधी कथाओं को याद करना विभिन्न समूहों का कार्य था, जिन्हें सूत या मागध कहते थे।**

अग्रहारिक - **5वीं-6वीं शताब्दी में ब्राह्मणों को राजकीय भूमि अनुदान के रूप में दिए जाने वाले गाँवों को अग्रहार, ब्रह्मदेय या शासन कहा जाता था तथा ऐसे ब्राह्मणों को 'अग्रहारिक' कहते थे। ये अग्रहार ग्राम राजस्व मुक्त होते थे तथा इन्हें कुछ विशेषाधिकार भी प्राप्त थे।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.: **भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में इतिवृत्तों, राजवंशीय इतिहासों तथा वीरगाथाओं को कंठस्थ करना निम्नलिखित में से किसका व्यवसाय था?** **(IAS-2016)**

(a) **श्रमण** (b) **परिव्राजक**

(c) **अग्रहारिक** (d) **मागध**

उत्तर - (d)

बंजारे

भारतीय इतिहास के मध्यकाल में बंजारे नमक के व्यापारी वर्ग से संबंधित थे। इन्हें लंबाणी, वंजारा और गोरमाटी भी कहा जाता था। वस्तुतः बंजारा एक ऐसा समुदाय है, जिसे सामान्यतः घुमंतू समुदाय के रूप में जाना जाता है। यह मुख्य रूप से भारत के राजस्थान में पाए जाते हैं। बंजारा शब्द संस्कृत के 'वनचर' शब्द से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है वनों में विचरण करने वाला। लंबाणी या लामनी संस्कृत शब्द 'लवण' से लिया गया प्रतीत होता है, जो इस समुदाय की प्रमुख व्यापार की वस्तु थी।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- **भारतीय इतिहास के मध्यकाल में बंजारे सामान्यतः कौन थे?** **(IAS-2016)**

(a) **कृषक** (b) **योद्धा**

(c) **बुनकर** (d) **व्यापारी**

उत्तर - (d)

महत्तर/पट्टकिल

पूर्व मध्यकाल या मध्यकालीन भारत में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' थी। इसका प्रमुख महत्तर कहलाता था। दक्षिण भारत में इसे पट्टकिल कहा जाता था।

वस्तुतः बुधगुप्त के शासनकाल में निर्गत दामोदर ताम्रपत्र अभिलेख में अष्टकुल-अधिकरण (आठ सदस्यों वाला बोर्ड) की चर्चा हुई है। इस परिषद् की अध्यक्षता 'महत्तर' करता था। हालांकि, ग्राम वृद्ध, ग्रामिक अथवा परिवार के मुखिया भी महत्तर कहे जाते थे।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- **मध्यकालीन भारत में 'महत्तर' व 'पट्टकिल' पदनाम किनके लिए प्रयुक्त होते थे?**

(IAS-2014)

(a) **सैन्य अधिकारी** (b) **ग्राम मुखिया**

(c) **कर्मकाण्ड के विशेषज्ञ** (d) **शिल्पी श्रेणियों के प्रमुख**

उत्तर - (b)

पंचायतन

'पंचायतन' शब्द मंदिर निर्माण की एक शैली से संबंधित है। इस शैली के अंतर्गत प्रमुख देवता के मंदिर के साथ चार गौण देव मंदिर होते थे। प्रमुख मंदिर वर्गाकार होता था और इसके सामने लंबा मंडप होता था। गौण देव मंदिरों को मंडप के चारों कोनों में एक-दूसरे के सम्मुख स्थापित किया जाता था। इस प्रकार मंदिर का भू-विन्यास क्रूस (Crucified Shape) के आकार का हो जाता था।

पंचायतन शैली में निर्मित प्रथम मंदिर देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) का दशावतार मंदिर है। इस शैली के अन्य मंदिर हैं - कंदरिया महादेव (खजुराहो), ब्रह्मेश्वर मंदिर (भुवनेश्वर), लक्ष्मण मंदिर (खजुराहो), लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर), गोंडेश्वर मंदिर (महाराष्ट्र)।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- **भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में 'पंचायतन' शब्द किसे निर्दिष्ट करता है?**

(IAS-2014)

(a) **ग्राम के ज्येष्ठ-जनों की सभा** (b) **धार्मिक संप्रदाय**

(c) **मंदिर रचना शैली** (d) **प्रशासनिक अधिकारी**

उत्तर - (C)

इबादतखाना

अकबर ने अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करने के उद्देश्य से 1575 **ई. में फ़तेहपुर सीकरी में इबादतखाने का निर्माण करवाया। इसमें प्रत्येक बृहस्पतिवार को संध्या के समय नियमित रूप से धार्मिक विचार-विमर्श हुआ करता था।** 1578 **ई. में अकबर ने इबादतखाना के द्वार सभी धर्मावलम्बियों के लिए खोल दिए। इसमें हिंदू, ईसाई, पारसी व जैन संतों ने भाग लिया। महत्वपूर्ण है कि इन धार्मिक चर्चाओं में किसी बौद्ध भिक्षु ने भाग नहीं लिया था। इसमें इस्लाम धार्म का नेतृत्व अब्दुल्ला सुल्तानपुरी तथा अब्दुन्नवी ने, हिंदू धर्म का नेतृत्व पुरूषोत्तम एवं देवी पंडित ने, पारसी धर्म का नेतृत्व दस्तूर मेहरजी राणा ने, जैन धर्म का नेतृत्व हरिविजय सूरी ने, ईसाई धर्म का नेतृत्व रूडोल्फ़ एक्वाविवा, एन्टोनी मॉन्सरेट व फ्रांसिस एनरिक्वेज (पुर्तगाली) ने किया।**

Questions asked in UPSC Exam

Q.- **फ़तेहपुर सीकरी का इबादतखाना क्या था?** **(IAS-2014)**

(a) **राजपरिवार के इस्तेमाल के लिए मस्जिद**

(b) **अकबर का निजी प्रार्थना कक्ष**

(c) **वह भवन, जिसमें विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ अकबर चर्चा करता था।**

(d) **वह कमरा, जिसमें विभिन्न धर्म वाले कुलीन जन-धार्मिक बातों के विचारार्थ जमा होते थे।**

उत्तर - (C)

चैत्य/विहार

भारतीय वास्तुकला से संबंधित स्थल चैत्य एवं विहार शैलकृत बौद्ध गफ़ाएं हैं। 'चैत्य' का शाब्दिक अर्थ है-चिता संबंधी। इसमें महापुरूषों के अवशेष सुरक्षित होते हैं। अतः चैत्य उपासना या प्रार्थना स्थल के केन्द्र बन गए। चैत्यों के पास बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए विहारों का निर्माण किया गया था। विहार के केन्द्र में एक चतुर्भुजाकार या अंडाकार कक्ष होता है। वस्तुतः शैलकृत बौद्ध गफ़ाओं के निर्माण की प्रक्रिया 200 ई.पू. से प्रारंभ हो चुकी थी, परंतु सातवाहन काल में पश्चिमोत्तर दक्कन में अत्यंत दक्षता के साथ चट्टानों को तराशकर चैत्य एवं विहार बनाए गए।

Questions asked in UPSC Exam

Q. कुछ शैलकृत बौद्ध गफ़ुाओं को चैत्य कहते हैं, जबकि अन्य को विहार। दोनों में क्या अंतर है? (IAS-2013)

(a) विहार पूजास्थल होता है, जबकि चैत्य बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है।

(b) चैत्य पूजा स्थल होता है, जबकि विहार बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान है।

(c) चैत्य गफ़ुा के दूर के सिरे पर स्तूप होता है, जबकि विहार गफ़ुा पर अक्षीय कक्ष होता है।

(d) दोनों में कोई वस्तुपरक अंतर नहीं होता।

उत्तर - (b)

त्रिभंग मुद्रा

भारतीय नाट्य शैली में 'त्रिभंग मुद्रा' के अंतर्गत एक ऐसी आकृति बनाई जाती है जिसमें एक पैर मोड़ा जाता है तथा शरीर कटि (कमर) एवं ग्रीवा (गर्दन) पर थोड़ी विपरीत दिशा में वक्र किया जाता है। त्रिभंग मुद्रा का प्रयोग पारंपरिक भारतीय मूर्तिकला में किया जाता है। इस मुद्रा का संबंध ओडिसी नृत्य से है। वस्तुतः ओडिसी नृत्य गतिविधि की तकनीकियाँ दो आधारभूत मुद्राओं 'चौक' और 'त्रिभंग' के आस-पास निर्मित होती हैं। 'त्रिभंग' एक स्त्रियोचित मुद्रा है, जिसमें शरीर गले, धड़ और घुटने पर मुड़ा होता है। इसमें शरीर का आकार अंग्रेजी वर्णमाला के 'S' अक्षर के समान हो जाता है।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में, नृत्य एवं नाट्य कला की एक मुद्रा जिसे 'त्रिभंग' कहा जाता है, प्राचीन काल से आज तक भारतीय कलाकारों को अतिप्रिय रही है। निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन इस मुद्रा को सर्वोत्तम रूप में वर्णित करता है? (IAS-2013)

(a) एक पाँव मोड़ा जाता है और देह थोड़ी, किंतु विपरीत दिशा में कटि एवं ग्रीवा पर वक्र की जाती है।

(b) मुख अभिव्यंजनाएँ, हस्तमुद्राएँ एवं आसज्जा, कतिपय महाकाव्य अथवा ऐतिहासिक पात्रों को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करने के लिए संयोजित की जाती हैं।

(c) देह, मुख एवं हस्तों की गति का प्रयोग स्वयं को अभिव्यक्त करने अथवा एक कथा कहने के लिए किया जाता है।

(d) मंद स्मिति, थोड़ी वक्र कटि एवं कतिपय हस्तमुद्राओं पर बल दिया जाता है, प्रेम एवं श्रृंगार की अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए।

उत्तर - (a)

श्रेणी

'श्रेणी' व्यवसाय में संलग्न लोगों की संस्था थी। यह मध्यकालीन यूरोप में गिल्ड (Guild) के समान थी। व्यापारियों के संघ की विशिष्ट संज्ञा 'निगम' थी। 'श्रेणी' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख उत्तर वैदिक ग्रंथों में मिलता है। सातवाहन काल में इन्हीं श्रेणियों को 'कुलिक निगम' कहा गया। श्रेणी का प्रमुख श्रेष्ठिन, सेट्ठी, ज्येष्ठक कहलाता था।

श्रेणी ही वेतन, काम करने के नियमों, मानकों एवं कीमतों को सुनिश्चित करती थी। ये दबाव समूह एवं बैंक का कार्य व सिक्के भी जारी करती थी। साथ ही श्रेणियाँ सामूहिक लोक कल्याण जैसे कार्यों (मंदिरों, तालाबों, सरायों एवं सार्वजनिक उद्यम) को भी सम्पन्न करती थीं तथा अपने सदस्यों के लिए संकट के समय रक्षक के रूप में सामने आती थीं। श्रेणी का अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार भी होता था। सामान्यतः राज्य एवं राजा इनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते थे। दक्षिण भारत में इन्हें 'वलन्जियर' भी कहा जाता था।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- प्राचीन भारत में देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली 'श्रेणी' संगठन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (IAS-2012)

1- **प्रत्येक 'श्रेणी' राज्य के एक केन्द्रीय प्राधिकरण के साथ पंजीकृत होती थी और प्रशासनिक स्तर पर राजा उनका प्रमुख होता था।**

2- **'श्रेणी' ही वेतन, काम करने के नियमों, मानकों और कीमतों को सुनिश्चित करती थी।**

3- **श्रेणी का अपने सदस्यों पर न्यायिक अधिकार होता था।**

कूटः

(a) **केवल** 1 **और** 2 (b) **केवल** 3 (c) **केवल** 2 **और** 3 (d) 1, 2 **और** 3

उत्तर - (c)

THE STUDY
MAPPHALESHU KADARACHAN
An Institute for IAS

कलारीपयट्टू

'कलारीपयट्टू' एक मार्शल आर्ट है। इसका प्रारम्भ 13वीं सदी में केरल में आरम्भ हुआ। 'क्लारी' शब्द का सर्वप्रथम वर्णन संगम साहित्य में मिलता है, जहाँ इसका प्रयोग युद्ध एवं युद्ध अखाड़ा दोनों के लिए होता है। यह तकनीक कदम एवं आसन का एक संयोजन होती है। कलारीपयट्टू की उत्तर भारतीय शैलियाँ मुख्यतः हथियारों पर आधारित हैं। मूलतः यह केरल के उत्तरी व मध्य भागों में तथा कर्नाटक के तुलुनाडु क्षेत्र में प्रचलित थी। अब यह तमिलनाडु में भी प्रचलित है।

Questions asked in UPSC Exam

Q- भारत की संस्कृति एवं परंपरा के संदर्भ में 'कलारीपयट्टू' क्या है? (IAS-2014)

(a) यह शैव मत का प्राचीन भक्ति ग्रंथ है, जो अभी भी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है।

(b) यह काँसे व पीतल के काम की एक प्राचीन शैली है, जो अभी भी कोरोमण्डल क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में पाई जाती है।

(c) यह नृत्य-नाटिका का एक रूप है और मालाबार के उत्तरी हिस्सों में एक जीवन्त परंपरा है।

(d) यह एक प्राचीन मार्शल कला है और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में जीवन्त परम्परा है।

उत्तर - (d)

भूमि स्पर्श मुद्रा

भगवान बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा का तात्पर्य है कि भगवान बुद्ध, मार (एक दानव का नाम) से प्रलोभनों के बावजूद अपनी शुचिता व शुद्धता का साक्षी होने के लिए पृथ्वी का आह्वान कर रहे हैं।

धर्मचक्र मुद्रा - भगवान बुद्ध की यह मुद्रा उनके जीवन के उन क्षणों से संबंधित है, जब उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के बाद सारनाथ के कुरंग उपवन में पहली बार उपदेश दिया।

अभय मुद्रा - यह मुद्रा शांति, सुरक्षा, दयालुता व भयमुक्तता की प्रतीक है।

ज्ञान मुद्रा - इसमें बुद्ध को अंगूठे से चक्र के निर्माण और हथेली से सीने को स्पर्श करते हुए दर्शाया गया है।

वरद मुद्रा - इसमें ऊर्जा की प्राप्ति हेतु पूर्णतः समर्पित होने का गुण दिखाया गया है।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- **भगवान बुद्ध की प्रतिमा कभी-कभी एकहस्त मुद्रा युक्त दिखाई गई है, जिसे 'भूमिस्पर्श मुद्रा' कहा जाता है। यह किसका प्रतीक है?** **(IAS-2012)**

(a) **मार पर दृष्टि रखने एवं अपने ध्यान में विघ्न डालने से मार को रोकने के लिये बुद्ध का धरती का आह्वान।**

(**b**) **मार के प्रलोभनों के बावजूद अपनी शुचिता और शुद्धता का साक्षी होने के लिये बुद्ध का धरती का आह्वान।**

(**c**) **बुद्ध का अपने अनुयायियों को स्मरण कराना कि वे सभी धरती से उत्पन्न होते हैं और अंततः धरती में विलीन हो जाते हैं, अतः जीवन संक्रमणशील है।**

(**d**) **इस संदर्भ में दोनों ही कथन 'a' एवं 'b' सही हैं।**

उत्तर - (b)

मंगानियार

मंगानियार अपने शास्त्रीय लोक संगीत के लिए प्रसिद्ध एक मुस्लिम समुदाय है, जो वंशानुगत पेशेवर संगीतकारों का समूह है, जिनको अभिजात्य वर्ग द्वारा समर्थन प्राप्त रहा है। ये राजस्थान के बाड़मेर एवं जैसलमेर तथा पाकिस्तान के सिंध प्रांत में निवास करते हैं। मुस्लिम समुदाय होने के बावजूद ये हिंदू देवी-देवताओं की स्तुति में भी गीत गाते हैं तथा दीपावली व होली भी मनाते हैं। कमाचया, ढोलक, खरताल आदि इनके प्रमुख वाद्य यंत्र हैं। इस समुदाय के प्रसिद्ध व्यक्तित्व समंदर खान, कचरा खान, सकर खान, गाजी खान आदि हैं। इनकी संगीत कला मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- **'मंगानियार' के नाम से जाना जाने वाला लोगों का समुदाय-** **(IAS-2014)**

(a) **पूर्वोत्तर भारत में अपनी मार्शल कलाओं के लिये विख्यात है।**

(b) **पश्चिमोत्तर भारत में अपनी संगीत परम्परा हेतु विख्यात है।**

(c) **दक्षिण भारत में अपने शास्त्रीय गायन हेतु विख्यात है।**

(d) **मध्य भारत में पच्चीकारी परम्परा के लिये विख्यात है।**

उत्तर - (b)

KARMANYEVADHIKARASTE
THE STUDY
An Institute for IAS

धुपद

धुपद भारत की एक समृद्ध शास्त्रीय संगीत शैली है। इसकी उत्पत्ति का श्रेय 15वीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को प्राप्त है। आगे चलकर मुगलकाल में यह शैली अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची।

वर्ण, अलंकार, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि धुव रूप में जहाँ संबद्ध रहें, उन गीतों को धुव कहा गया। जिन पदों में यह नियम शामिल होता है, उन्हें 'धुवपद' या 'धुपद' कहा जाता है। धुपद की भाषा ब्रज है तथा इसका विषय मुख्य रूप से ब्रज का रास है। आगे मुगलकाल में इस पर उर्दू का भी प्रभाव पड़ा। यह आलाप मंत्रों से लिए गए संस्कृत वर्णों पर आधारित है। स्वामी हरिदास जी ने सर्वप्रथम इनके वर्गीकरण व शास्त्रीयकरण का प्रयत्न किया। वर्तमान में धुपद एकल गायक या गायकों के समूह द्वारा पखावज या मृदंग की थाप पर गाया जाता है।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- सदियों से भारत में जीवित रही एक प्रमुख परम्परा 'धुपद' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं? (IAS-2012)

1- धुपद की उत्पत्ति तथा विकास मुगलकाल में राजपूत राज्यों में हुआ।

2- धुपद मुख्यतः भक्ति और अध्यात्म का संगीत है।

3- धुपद आलाप मंत्रों से लिए गए संस्कृत अक्षरों पर आधारित है।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3

(c) 1, 2 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहंीं।

उत्तर - (b)

धर्म/ऋत्

वैदिक काल में 'धर्म' शब्द का अर्थ विधि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वस्तुतः वैदिक कालीन लोक ईश्वर में आस्था रखते थे तथा धर्म को व्यक्तियों के दायित्वों व कर्त्तव्यों के रूप में देखते थे। इसका संबंध नैतिकता से नहीं था।

ऋग्वैदिक देवता वरुण का संबंध 'ऋत्' से था। ऋत् का अर्थ 'सत्य एवं अविनाशी सत्ता ' है। यह एक नैतिक व्यवस्था थी। इसे विश्व की व्यवस्था का नियामक माना गया है। सभी

देवताओं की उत्पत्ति इसी से हुई है। देवताओं को ऋत्-व्रत कहा गया है। ऋग्वेद में वरुण को नैतिक व्यवस्था का देवता माना गया है। इसीलिए इनको 'ऋतस्यगोपा' भी कहा जाता था।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- 'धार्म' और 'ऋत्' भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता के एक केन्द्रीय विचार को चित्रित करते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये- (IAS-2011)

1- 'धर्म' व्यक्ति के दायित्वों एवं स्वयं तथा दूसरों के प्रति व्यक्तिगत कर्त्तव्यों की संकल्पना था।

2- 'ऋत्' मूलभूत नैतिक विधान था जो सृष्टि और उसमें अंतर्निहित सारे तत्त्वों के क्रियाकलापों को संचालित करता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर - (c)

अनेकांतवाद

अनेकांतवाद, जैन धर्म से संबंधित दर्शन है। इसे स्यादवाद भी कहते हैं। स्यादवाद एक दृष्टि है। जब तक यह दृष्टि विचार क्षेत्र में रहती है, अनेकांत है, वहीं जब यह भाषा का रूप लेकर वाणी से निकलती है, तब वह स्यादवाद हो जाती है। यह किसी कथन के 7 प्रकार हैं, जिसे 'स्यात्' शब्द से जोड़कर देखा जाना अनिवार्य है_ जैसे - स्यात आस्ति (शायद है), स्यात नास्ति (शायद नहीं है) आदि। स्यादवाद का अर्थ है- संभवतः ऐसा होता है। चूँकि हम सत्य के केवल एक स्वरूप को ही देखकर सम्पूर्ण सत्य की धारणा बना लेते हैं, जबकि सत्य के अनेक स्वरूप होते हैं। इसलिए इसे अनेकान्तवाद भी कहते हैं। स्यादवाद को वास्तविकता की बहुलता का सिद्धान्त एवं ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त भी कहते हैं।

Questions asked in UPSC Exam

फ़ण्Q- अनेकान्तवाद निम्नलिखित में से किसका क्रोड सिद्धान्त एवं दर्शन है? (IAS-2009)

(a) बौद्ध मत (b) जैन मत (c) सिख मत (d) वैष्णव मत

उत्तर - (b)

‘पवरन

वर्षावास की समाप्ति के बाद बौद्ध भिक्षु ‘पवरन’ पर्व मनाते थे। इसमें भिक्षु द्वारा किए गए अपराधों को स्वीकार किया जाता था। यह उपोस्थ से इस अर्थ में भिन्न है कि जहाँ उपोस्थ पाक्षिक (15 दिन) परिशुद्धि था, वहीं पवरन वार्षिक परिशुद्धि था। यह ग्यारहवें चंद्रमास की पूर्णिमा को मनाया जाता था।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- प्राचीन भारत के बौद्ध मठों में, ‘पवरन’ नामक समारोह आयोजित किया जाता था जोः

(IAS-2002)

(a) संघपरिनायक और धर्म तथा विनय विषयों पर एक-एक वक्ता को चुनने का अवसर होता था।

(b) वर्षा ऋतु के दौरान मठों में प्रवास के समय भिक्षुओं द्वारा किये गए अपराधों की स्वीकारोक्ति का अवसर होता था।

(c) किसी नए व्यक्ति को बौद्ध संघ में प्रवेश देने का समारोह होता था, जिसमें उसका सिर मुंडवा दिया जाता था ओर पीले वस्र दिये जाते थे।

(d) आषाढ़ की पूर्णिमा के अगले दिन बौद्ध भिक्षुओं के एकत्र होने का अवसर होता था जब वे वर्षा ऋतु के आगामी चार महीनों के लिए निश्चित आवास चुनते थे।

उत्तर - (b)

दीवान-ए-बंदगान/दीवान-ए-मुस्तखराज/
दीवान-ए-कोही/दीवान-ए-अर्ज

दीवान-ए-बंदगान - यह दासों से संबंधित विभाग था। इसकी स्थापना फ़िरोजशाह तुगलक द्वारा की गई थी। इसका कार्य दासों की संख्या में वृद्धि करना तथा उनकी समस्याओं का समाधान करना था।

दीवान-ए-मुस्तखराज - सल्तनत काल में यह राजस्व विभाग था। इसकी स्थापना अलाउद्दीन खिलजी द्वारा की गई थी। इसका कार्य बकाया भू-राजस्व की वसूली करना, राजस्व एकत्र करने वाले अधिकारियों की बकाया राशि की जाँच करना तथा उसे वसूलना था।

KARMANYEVADHIKARASTE MAA PHALESHU KADACHAN
THE STUDY
An Institute for IAS

दीवान-ए-कोही - यह एक कृषि विभाग था। इसकी स्थापना मुहम्मद-बिन-तुगलक द्वारा की गई थी। इसका कार्य कृषि भूमि का विस्तार करना एवं मालगुजारी व्यवस्था को सुदृढ़ करना था।

दीवान-ए-अर्ज - यह बलबन द्वारा स्थापित सैन्य विभाग था। इसका कार्य सैनिकों की भर्ती करना, सैन्य अभियानों का आयोजन, वेतन निर्धारण, सैनिक निरीक्षण आदि था।

Questions asked in UPSC Exam

फ़्ण्ू- निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा सही रूप में सुमेलित है? **(IAS-2001)**

(a) दीवान-ए-बंदरगान - फ़िरोजशाह तुगलक

(b) दीवान-ए-मुस्तखराज - बलबन

(c) दीवान-ए-कोही - अलाउद्दीन खिलजी

(d) दीवान-ए-अर्ज - मुहम्मद बिन तुगलक

उत्तर - (a)

इक्ता/जागीर/अमरम्/मोकस

इक्ता - 'इक्ता' एक अरबी शब्द है। इक्ता व्यवस्था को दिल्ली सल्तनत में भावी सेवा की शर्तों पर राजस्व हस्तांतरण के उद्देश्य से स्थापित किया गया था।

जागीर - जागीर भूमि मुगलकाल में वह भूमि थी, जो राज्य के प्रमुख कर्मचारियों को उनकी तनख्वाह के बदले दी जाती थी।

अमरम- विजयनगर साम्राज्य में नायकों (भू-सामंत) को वेतन के बदले अथवा अधीनस्थ सेना के रख-रखाव के लिए दिया जाने वाला भू-खण्ड अमरम् कहलाता था तथा ऐसे नायकों को 'अमरनायक' कहा जाता था।

मोकस - मराठों के अंतर्गत सैनिक सेवा के बदले दिया गया भूमि अनुदान 'मोकस' कहलाता था। यह राजस्व मुक्त भूमि होती थी।

Questions asked in UPSC Exam

Q.- सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिएः- **(IAS-2000)**

	सूची-I		सूची-II
A.	इक्ता	1-	मराठे
B.	जागीर	2-	दिल्ली के सुल्तान
C.	अमरम	3-	मुगल
D.	मोकस	4-	विजयनगर

कूटः

	A	B	C	D
(a)	3	2	1	4
(b)	2	3	4	1
(c)	2	3	1	4
(d)	3	2	4	1

उत्तर - (b)

KARMANYEVADHIKARASTE
THE STUDY
MAA PHALESHU KADAACHAN
An Institute for IAS